अनुपमा यात्रा

वर्षः 01/ संस्करणः 02/ पृष्ठः 08/ मूल्यः 5 रूपये | भिवानी, शनिवार 10 फरवरी 2024 | anupama.express@ammb.ac.in

19वें दीक्षांत समारोह में प्रदान की गई विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक व डिग्री

कानून से ज्यादा मूल्यों को सम्मान दें : प्रो. केके अग्रवाल

स्वयं पर विश्वास रखें, सृजनात्मकता को प्राथमिकता दें : प्रो. आरके मित्तल

छात्रा प्रियांसी ने अंग्रेजी स्नातकोतर में सीबीएलयू में प्राप्त किया प्रथम स्थान

ज्ञान की प्यास बुझाने के लिए केवल डिग्री जरूरी नहीं अपितु मानसिक शक्ति जरूरी है। 15 प्रतिशत ज्ञान शिक्षा से व 85 प्रतिशत ज्ञान आप बाहरी वातावरण से सीखते है। प्रकृति से जुड़े, सीखने की क्षमता को विकसित करें, समयानुसार अपने आप को बदलें और स्वयं पर विश्वास रखें।

यह उद्गार मुख्य अतिथि अध्यक्ष साउथ एशियन विश्वविद्यालय, विख्यात शिक्षाविद् प्रो. के. के अग्रवाल ने आदर्श महिला महाविद्यालय, भिवानी में आयोजित 19 वें 'दीक्षांत समारोह' में छात्राओं का शैक्षणिक मार्ग प्रशस्त करते हुए कहें। उन्होंने यह भी कहा कि युवा पीढ़ी में केवल किताबी ज्ञान का होना आवश्यक नही अपितु छात्राओं को शोध कार्यो में भी बढ़-चढ़ कर भाग लेना चाहिए। नई शिक्षा नीति में भी शोध कार्यो को अत्याधिक महत्व दिया गया हैं। छात्राओं को सृजनात्मकता के साथ शिक्षा ग्रहण करने के लिए कहा। स्वयं पर विश्वास रखकर अवसर का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि यह कभी न सोचे कि अकेला व्यक्ति कुछ नहीं कर सकता जबकि शोध कहता है कुछ व्यक्तियों के प्रयास से दुनिया बदली जा सकती है।

आज शिक्षा में तेजी से बदलाव आ रहा है। विद्यार्थियों को चाहिए कि वह इस बदलाव के ज्ञान के प्रसार के साथ चलें। आज का युग तकनीकी क्रांति का युग है। उन्होंने छात्राओं को यह भी संदेश दिया कि वह उनकी शिक्षा के क्षेत्र में किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता होगी तो वह उसे हर प्रकार से प्राथमिकता देगे।

समारोह में कुलपति, चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय प्रो0 राजकुमार मित्तल ने विधिवत दीक्षांत समारोह की शुरुआत कर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि विद्यार्थियों को केवल रोजगार की तरफ ध्यान न देकर नवाचार और नई-नई तकनीक अपनाकर रोजगार सृजन करने वाला बनना चाहिए। उन्होंने यह भी कहा कि देश को विकसित राष्ट्र व भारत को फिर से विश्व गुरु बनाने के संकल्प को साकार करने में युवाओं की भूमिका जरूरी है। नौकरी ढूंढने वालों की बजाय नवाचार को अपनाकर नौकरी देने वाले बनो। उन्होंने कहा कि आज का यह उपलब्धियों भरा गौरवमय क्षण अथक परिश्रम के साथ-साथ आपके माता-पिता के त्याग, तपस्या और कठोर परिश्रम एवं आपके गुरुजनों के सहयोग व मार्गदर्शन का परिणाम है। उन्होंने छात्राओं को भारतीय दर्शन में पंचकोश का सिद्धांत विशेष रूप से समझाया और बताया मानसिक संतुलन, तर्कसंगत सोच, प्राकृतिक खाना और आनंदमय जीवन सफलता के मुलमंत्र है। प्रबंधक समिति के महासचिव अशोक बुवानीवाला ने अतिथियों का स्वागत करते हुए छात्राओं को प्राप्त शिक्षा का व्यावहारिक जीवन में प्रयोग करने का संदेश दिया और कहा कि बदलते परिदृश्य में स्वयं को ढालें और तकनीकी शिक्षा को ग्रहण करें। स्वयं का व महाविद्यालय का नाम रोशन करें।

...शेष खबर पेज दो पर

छात्रा वंशिका गौड़ ने कहा कि केवल किताबी ज्ञान आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं करता अपितु हर क्षेत्र में बढ़-चढ़ कर भाग लेने से ज्ञान का प्रसार होता है।

छात्रा सिमरन ने कहा कि यह केवल हमारे प्रयास से संभव नहीं हुआ अपितु हमारे माता-पिता एवं गुरूजनों के पूर्ण सहयोग से ही यह संभव हो पाया है।

छात्रा आरजू ने कहा कि मैं विज्ञान संकाय की छात्रा हूं और आज यह अवार्ड प्राप्त कर मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इसकी सफलता का श्रेय पूर्ण रूप से महाविद्यालय की प्राध्यापिकाओ को है जिन्होंने शिक्षा के साथ-साथ मुझे हर क्षेत्र में पारंगत किया।

शिक्षक वर्ग से डॉ0 मोहिनी सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका अवार्ड व गैर-शिक्षक वर्ग से राजरानी को सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी अवार्ड दिया गया।

आदर्श महिला महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति के चुनाव सम्पन्न

आदर्श महिला महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी के तीन वर्षीय चुनाव में प्रधान पद पर पूर्व मुख्यमंत्री बनारसी दास के पुत्र अजय गुप्ता व उपप्रधान पद पर सुनीता गुप्ता निर्विरोध बने है। इसके अलावा आज हुए चुनाव में कुल 74 मतदाताओं ने भाग लिया। जिसमे महासचिव पद के लिए अशोक बुवानीवाला व मुकेश गुप्ता के बीच कड़ा मुकाबला रहा। जिसमें अशोक बुवानीवाला को 57 मत मिले, जबकि मुकेश गुप्ता को 17 मत प्राप्त हुए। अशोक बुवानीवाला मुकेश गुप्ता के मुकाबले 40 मत अधिक लेकर विजय रहे। अशोक बुवानीवाला चौथी बार महासचिव बने हैं।

...शेष खबर पेज दो पर

गणतंत्र दिवस याद दिलाता है शहीदों की शहादत : सुनीता गुप्ता

आदर्श महिला महाविद्यालय में 75 वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि उपाध्यक्ष, महाविद्यालय प्रबंधन समिति सुनीता गुप्ता ने ध्वजारोहण किया। उन्होंने इस अवसर पर छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि गणतंत्र दिवस वह अवसर है, जो हमें शहीदों की शहादत याद दिलाता है। आज हम स्वतंत्र भारत में सांस ले रहे हैं वह शहीदों के त्याग व बलिदानों से ही संभव हो पाया है । प्राचार्य डॉ. अलका मित्तल ने सभी को गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई दी और कहा की देश की उन्नति में महिलाओं का योगदान अग्रणी रहा है। लोकतांत्रिक देश में महिलाएं आज बढ़कर अपनी भूमिका अदा कर रही है। उन्होंने यह भी कहा कि दायित्व एवं अधिकार साथ-साथ चलते हैं। अधिकारों का पालन करते हुए हमें अपने दायित्वों को कभी नहीं भूलना चाहिए । कार्यक्रम में पवन केडिया, प्रीतम अग्रवाल, रवि जांगडा डॉ रेनू नेहा, मोहिनी ,डॉ गायत्री बंसल सहित समस्त शिक्षक एवं गैर शिक्षक वर्ग उपस्थित रहा

14वें मतदान दिवस पर जिला स्तरीय मतदाता जागरुक अभियान का हुआ आगाज

वोट बनवाए, वोट डाले, और अच्छे नेता को चुनेः नरेश नरवाल

जिला स्तरीय 14 वे मतदाता दिवस पर आदर्श महिला महाविद्यालय में विभिन्न महाविद्यालयों व विद्यालयों से विद्यार्थियों ने मतदाता जागरुक अभियान में हिस्सा लिया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि जिला उपायुक्त, भिवानी नरेश नरवाल, सिटी मजिस्ट्रेट, भिवानी हरबीर सिंह ने शिरकत की। जिला उपायुक्त नरेश नरवाल ने विधार्थियों को वोट की महत्वता के बारे में बताते हुए कहा कि युवाओ के बीच मतदान एक पर्व की तरह होना चाहिए। हमें ऐसा नही सोचना चाहिए कि मेरे एक मत से क्या होगा अपितु इसका महत्व जानकर मतदान में बढ़कर भागीदारी स्थापित करनी चाहिए। उन्होनें यह भी कहा कि युवाओ को लोकतत्रं के प्रति अपने दायित्व को अवश्य निभाना चाहिए। महाविद्यालयों व विद्यालयों को हिदायत दी कि वह मतदाता दिवस पर वाद-विवाद प्रतियोगिता अवश्य करवाऐं ताकि युवाओं को वोट की महत्वता का पता चला।

उन्होनें महाविद्यालयों को सशक्त एलुमुनाई बनाने के लिए कहा ताकि रोजगार के अच्छे अवसर उपलब्ध हो सके। विद्यार्थियों को शिक्षा ग्रहण करने के गूढ़ मत्रं भी बताएं। सिटी मजिस्ट्रेट, हरबीर सिंह ने युवाओं को निष्पक्ष होकर मतदान मे भागीदारी करने के लिए प्रेरित किया और कहा कि इस वर्ष देश व प्रदेश दोनो के मतदान होने सुनिश्चित है। जिसमें युवाओं को पूर्ण विश्लेषण कर प्रत्याशियों के गुणों व अवगुणों को देखकर मतदान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत में मतदान का समानता का अधिकार है सभी के मत का महत्व समान है चुनाव आयोग तहसीलदार जयबीर सिवाच ने कार्यक्रम में आएं सभी अतिथिगण का स्वागत एवं अभिनन्दन किया।

...शेष खबर पेज दो पर

वोट से पहले पूर्ण विश्लेषण कर मतदान करेः हरबीर सिंह

महाविद्यालय की छात्राओं में मतदान को लेकर अत्याधिक उत्साह है। खासकर जो छात्राऐं पहली बार वोट ड़ालेगी उनके अन्दर बहुत खुशी है।

छात्रा काजल ने कहा लोग इस उधेड़बुन में लगे है कौन जीतेगा और कौन हारेगा लेकिन मुझे तो पहली बार वोट डालने की खुशी है।

संगीता ने कहा कि पहली बार वोट डालने की खुशी कुछ अलग ही होती है। आज एक वोट का भी फर्क पड़ता है। मैं देश में बदलाव की उम्मीद में वोट दूंगी।

पलक ने कहा कि मैं वोट देने के लिए काफी उत्साहित हूँ मुझे एहसास है कि मेरा एक वोट देश की दिशा व दशा बदल सकता है।

रिशा ने कहा मैं पहली बार ईवीएम मशीन का बटन दबाऊंगी, जो कि एक सुखद अनुभूति का एहसास देगी। मैं किसी पार्टी को वोट न देकर एक ऐसे इंसान को वोट दूंगी जो मेरे देश की प्रगति में अहम रोल निभाएं।

तन्नु ने कहा कि पहले अपने सभी परिवार वालों को वोट देते हुए लगता था कि कभी मेरी भी बारी आएगी। मै भी अपने देश की सरकार बनाने में अहम भूमिका निभाऊंगी। आज मुझे यह अवसर मिला जिसके लिए मैं इंतजार कर रही थी।

Draupadi Murmu: A Trailblazer in Tribal Empowerment

Draupadi Murmu, a name that resonates with resilience and leadership, is a prominent figure in the realm of tribal empowerment. Born in the tribal heartland of Jharkhand, India, Murmu emerged as a formidable force, dedicated to uplifting her community.

Murmu's journey began in the face of adversity, navigating the challenges that often accompany tribal life. Undeterred by societal norms and limitations, she embraced education as a catalyst for change. Her commitment to learning led her to become a beacon of inspiration for many young tribals aspiring to break free from the shackles of ignorance.

As an advocate for tribal rights, Murmu played a pivotal role in fostering awareness about the rich cultural heritage of her community. She tirelessly worked towards preserving and promoting tribal languages, art, and traditions, recognizing their intrinsic value in the mosaic of India's diversity.

In the realm of politics, Draupadi Murmu emerged as a trailblazer. Her foray into the political arena marked a significant milestone for tribal representation. Through her leadership, she aimed to bridge the gap between policy-making and the grassroots, ensuring that tribal voices were not only heard but also actively

involved in shaping the narrative of their own future.

The establishment of educational institutions in tribal areas became a cornerstone of Murmu's vision. She believed that education was the key to unlocking the potential within every tribal child. By spearheading initiatives to build schools and promote access to quality education, she laid the foundation for a brighter future for generations to come.

Beyond her political and educational endeavors, Draupadi Murmu championed economic empowerment for tribal communities. Encouraging sustainable practices and supporting local entrepreneurship, she aimed to create self-reliance within tribal societies, breaking the cycle of dependence on external forces.

Murmu's legacy extends beyond regional boundaries; she serves as an inspiration for leaders and activists advocating for tribal rights globally. Her life's work underscores the importance of inclusivity, diversity, and the empowerment of marginalized communities.

In conclusion, Draupadi Murmu's journey is a testament to the transformative power of one individual's commitment to change. Her contributions to tribal empowerment, education, and cultural preservation echo loudly, reminding us of the significance of embracing diversity and ensuring that no community is left behind on the path to progress.

Remembering Kalpana Chawla: A Trailblazer in the Skies

On the solemn occasion of Kalpana Chawla's death anniversary, we take a moment to reflect on the life of an extraordinary individual who left an indelible mark on the aerospace industry and inspired countless aspiring astronauts.

Kalpana Chawla, born on March 17, 1962, in Karnal, India, embarked on a journey that would defy the bounds of Earth's atmosphere. Her passion for aerospace engineering led her to pursue a master's degree in the United States, where she eventually earned a doctorate in aerospace engineering.

Chawla's illustrious career reached new heights when she became the first woman of Indian origin in space, serving as a mission specialist on the Space Shuttle Columbia in 1997. This historic achievement not only brought pride to her homeland but also shattered gender and cultural stereotypes, showcasing the power of determination and ambition.

Tragically, on February 1, 2003, the world lost Kalpana Chawla in the Columbia space shuttle disaster. The incident was a stark reminder of the risks inherent in space exploration and the sacrifices made by those who push the boundaries of human knowledge. Her legacy, however, continues to inspire generations. Chawla's fearless pursuit of knowledge and her dedication to her craft serve as a beacon for aspiring scientists and astronauts worldwide. The impact of her contributions extends beyond her achievements in space; she remains a symbol of resilience, breaking barriers, and embracing one's dreams.

In her memory, educational institutions, scholarships, and awards have been established to encourage and support young minds in the fields of science and aerospace. The Kalpana Chawla Foundation, among others, works tirelessly to ensure that her spirit lives on, fostering a passion for exploration and discovery.

As we commemorate the death anniversary of Kalpana Chawla, let us not only mourn the loss of a brilliant mind but also celebrate the enduring legacy she left behind. Her journey from the small town of Karnal to the vastness of space serves as a testament to the boundless possibilities that arise when determination meets opportunity.

In the vast cosmos of achievements, Kalpana Chawla's star continues to shine brightly, guiding us to reach for the stars and reminding us that even in the face of adversity, the pursuit of knowledge knows no limits.

Mary Kom: A Beacon of Inspiration for Women in Sports

Mary Kom, a name that resonates with grit, determination, and unparalleled success, stands as a shining example of inspiration for women in the realm of sports. Hailing from Manipur, India, this diminutive yet powerful boxer has not only conquered the boxing ring but has also broken down barriers and stereotypes, paving the way for countless aspiring female athletes.

Early Life and Challenges: Born as Mangte Chungneijang Mary Kom in 1982, Mary faced numerous challenges in her journey to becoming a boxing sensation. Growing up in a modest family in Manipur, where sports infrastructure was scarce, she confronted societal norms that questioned the appropriateness of girls participating in sports, let alone boxing. Undeterred by these obstacles, Mary Kom displayed an early penchant for boxing. With the unwavering support of her parents, she began honing her skills, training rigorously despite the lack of proper facilities. Her journey is a testament to the fact that passion and perseverance can triumph over adversity.

Olympic Triumphs: Mary Kom's achievements in the boxing arena are nothing short of extraordinary. A six-time World Champion and an Olympic bronze medalist, she has etched her name in the annals of sports history. Her success in the 2012 London Olympics, where she became the first Indian woman boxer to win an Olympic medal, inspired a generation of young girls to pursue their dreams.

Breaking Stereotypes: Mary Kom's impact extends beyond her achievements; she has been a trailblazer in breaking gender stereotypes. Challenging the notion that certain sports are reserved for men.

पेज एक का शेष

स्वयं पर विश्वास रखें, सृजनात्मकता को प्राथमिकता दें: प्रो. केके अग्रवाल

दीक्षांत समारोह में प्रियांसी, शिवांगी कानोडिया व नेहा छात्राओं को स्वर्ण पदक प्रदान किए। स्नातक की 1000 से अधिक, स्नातकोत्तर की 60 डिग्रीयाँ छात्राओं को प्रदान की गई। समारोह में शैक्षणिक स्तर पर उपलब्धियाँ प्राप्त करने वाली लगभग 1200 छात्राओं को व सांस्कृतिक स्तर पर अपनी प्रतिभा का परचम लहराने वाली 80 छात्राओं को मुख्य अतिथि द्वारा नकद राशि व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। महाविद्यालय में गत वर्ष में सभी विधाओं में ऑल राउंडर रहने वाली छात्राओं को अवार्डों से नवाजा गया। स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाली छात्राओं ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि आज यह उपलब्धि उन्हें उनके परिश्रम व गुरुजनों के मार्गदर्शन से प्राप्त हुई है। भविष्य में इसी प्रकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करती रहेंगी और अपने महाविद्यालय व देश का नाम रोशन करेगी। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने महाविद्यालय की वार्षिक उपलब्धियों से सभी को अवगत करवाया और बताया कि महाविद्यालय पिछले 50 वर्षो से उन्नति के नये कीर्तिमान स्थापित करता आ रहा है मात्र तीन छात्राओं से प्रारम्भ हुआ महाविद्यालय आज 3000 छात्राओं को न केवल शिक्षा के क्षेत्र में अपितु सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यों के साथ उनके भविष्य का निर्माण भी कर रहा है। महाविद्यालय की छात्राएँ प्रशासनिक, राजनीतिक एवं अन्य क्षेत्रों में अपनी सेवाएं देकर महाविद्यालय का नाम रोशन कर रही हैं। समारोह में अध्यक्ष, वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट शिवरतन गुप्ता, प्रबंधकारिणी समिति अध्यक्ष, अजय गुप्ता, सुरेश गुप्ता, नंदकिशोर अग्रवाल, सुंदरलाल अग्रवाल, पवन केडिया, प्रो0 सुनील गुप्ता, सुरेश देवरालिया, सुनीता गुप्ता, सांवरमल, प्रीतम अग्रवाल, सुभाष सोनी सहित शिक्षाविद् एवं छात्राएं उपस्थित रही।

14वें मतदान दिवस पर जिला स्तरीय मतदाता जागरुक अभियान का हुआ आगाज

इस वर्ष मतदान की थीम वोट जैसा कुछ नही, वोट जरुर डालेगें हम, पर प्रकाश डालते हुए युवाओं को अधिक से अधिक वोट बनवाकर मतदान करने के लिए कहा। मतदान ब्राण्ड अम्बेंसडर एड़वोकेट प्रिया लेघा ने तीन शब्द मत, मतदाता, और मतदान के महत्व को युवाओ के साथ साझा किया और अधिक से अधिक वोट डालने की अपील की। कार्यक्रम में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने अतिथिगण को स्मृति चिन्ह भेट कर उनका अभिनन्दन किया। इस अवसर डॉ. रिंकू अग्रवाल ने सभी अतिथिगण का स्वागत भाषण द्वारा आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम संयोजिका अनिता वर्मा, टीम सदस्त बबीता चौधरी, डॉ. रेनू, मीड़िया प्रभारी डॉ. गायत्री बंसल, ममता वधवा, डॉ. निधि बूरा व महाविद्यालय का समस्त शिक्षक व गैर-शिक्षक वर्ग कार्यक्रम में उपस्थित रहा।

महाविद्यालय की प्रबंधकारिणी समिति के चौथी बार महासचिव बने अशोक बुवानीवाला

सहसचिव पद के लिए पवन केड़िया को 39 व सज्जन कुमार कबाड़ी को 35 मत मिले। सहसचिव पद में पवन केडिया चार मतों से विजयी हुए। कोषाध्यक्ष के लिए सुंदरलाल को 40 मत व कमलेश चौधरी को 34 मत प्राप्त हुए। कमलेश चौधरी के मुकाबले सुंदरलाल गोटेवाला को 6 मत ज्यादा प्राप्त होने पर विजयी रहे। अशोक बुवानीवाला अनेक समाजिक व धार्मिक संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। अशोक बुवानीवाला ने अपनी जीत के पश्चात कहा कि ये जीत महाविद्यालय के विकास की जीत है। उन्होंने कहा कि आने वाले वर्षों में लड़कियों को स्वावलम्बी बनाने के लिए रोजगारपरक कोर्स शुरू करेंगे। उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में बने इस महाविद्यालय को 53 वर्ष हो चुके है।

Namita Thapar: A Visionary Leader in the Corporate World

Introduction: Namita Thapar, a dynamic and accomplished leader, stands as an exemplar of excellence in the corporate domain. With a career marked by strategic thinking, innovation, and a commitment to diversity and inclusion, Namita has left an indelible mark on the business landscape. This article explores the life, career, and impact of Namita Thapar.

Early Life and Education: Born with an innate curiosity and drive for success, Namita Thapar embarked on her journey in the corporate world with a strong educational foundation. Armed with a degree in business or a related field, she demonstrated early on the qualities that would propel her to leadership positions.

Career Trajectory: Namita's ascent in the corporate world is characterized by a series of notable achievements. With a keen eye for business strategy, she navigated through various roles, showcasing versatility and adaptability. Her career trajectory reflects a commitment to continuous learning and a willingness to take on challenges, traits that have contributed to her success.

Leadership and Innovation: At the core of Namita Thapar's success lies her exceptional leadership and innovative thinking. Whether spearheading new projects, leading teams, or navigating through industry

changes, she has consistently demonstrated a strategic mindset that sets her apart. Her ability to envision and implement innovative solutions has not only driven business success but has also inspired those around her.

Diversity and Inclusion: Namita Thapar has been a vocal advocate for diversity and inclusion in the corporate world. Recognizing the importance of a diverse workforce, she has championed initiatives that promote equality and create opportunities for individuals from all backgrounds. Her commitment to fostering an inclusive work environment is a testament to her belief in the power of diverse perspectives.

Philanthropy and Social Responsibility: Beyond her corporate endeavors, Namita Thapar is actively engaged in philanthropy and social responsibility. Whether supporting community initiatives, education programs, or healthcare projects, she uses her influence and resources to make a positive impact on society. Her dedication to giving back reflects a holistic approach to leadership that extends beyond the boardroom.

Inspiration to Aspiring Leaders: Namita Thapar's journey serves as an inspiration to aspiring leaders, particularly women looking to make their mark in the corporate world. Her story exemplifies the possibilities that arise when talent, hard work, and a commitment to positive change converge. By breaking barriers and leading with purpose, Namita has become a role model for the next generation of business leaders.

Conclusion: Namita Thapar's impact on the corporate world is a testament to her leadership acumen, innovative thinking, and commitment to making a difference. As a visionary leader and advocate for diversity, she continues to shape the landscape of business while inspiring others to reach new heights. Namita Thapar's story is a reminder that success is not just about individual achievement but also about creating a positive impact on the broader community and society.

ADARSH MAHILA MAHAVIDYALAYA, BHIWANI
Save
Environment
Youth Festival
January 16 to 18, 2024

बजट 2024 पर छात्राओं की समीक्षा व अपेक्षा

A Middle- class odyssey:
Expectations from Budget 2024

As we approach the 2024 budget, it is important to focus on the expectations and aspirations of the middle class who represent the majority seeking stability, prosperity, and a fair share of the nation's progress. The middle class is the backbone of our nation's economy, navigating the ups and downs of fiscal policies with determination.

Paying substantial taxes can feel overwhelming, particularly when salaried individuals fall into a higher tax bracket. However, certain strategies can help save a significant amount of tax, such as incorporating allowances like Leave Travel Allowance (LTA), food coupons, and House Rent Allowance (HRA).

An average middle-class family may find navigating the complexities of taxes to be an overwhelming task. With the upcoming budget of 2024, there is hope for some relief and simplification of the tax system. A reduction in income tax rates or an increase in the exemption limit could result in more disposable income for the middle class, providing much-needed financial relief.

The COVID-19 pandemic has highlighted the significance of making healthcare easily accessible and affordable for everyone. Middle-class families are eagerly anticipating increased investments in healthcare infrastructure, which can make quality medical services more affordable and accessible. People are also looking forward to health insurance

incentives and measures aimed at curbing the rising costs of medicines. Education is the cornerstone of social and economic progress, and increased budgetary allocations for schools, colleges, and skill development programs, along with measures to make quality education more affordable for everyone, are wholeheartedly welcomed.

The desire to own a home is a fundamental goal of the middle class. The Budget 2024 should tackle the issue of skyrocketing real estate prices by implementing policies that encourage affordable housing. Offering subsidies, tax incentives, or special programs that facilitate home ownership would make a significant difference for many people. In the symphony of economic policies, the middle class often emerges as the unsung hero, diligently contributing to the nation's growth. As we approach budget 2024, we eagerly anticipate a transformative performance that addresses the twin pillars of job creation and stability. Supporting small and medium-sized enterprises (SMEs) should be a top priority, as they form the backbone of many middle-class livelihoods.

The COVID-19 pandemic has sped up the transition towards remote work and online learning. We expect to see investments in digital infrastructure that will ensure reliable and affordable internet connectivity. This will not only support work-from-home arrangements but also improve access to online education and services.

As middle-class families, our top priority is to ensure that the budget supports inclusive growth. We believe in policies that help bridge the gap of inequality, empower us, and provide opportunities for upward mobility. These policies align perfectly with our aspirations to build a better future.

In the 2024 budget, we urge the government to focus on addressing social inequality. Allocating resources for education, healthcare, and social welfare programs that uplift the marginalized and underprivileged sections of society is crucial for achieving inclusive growth. In the grand theater of fiscal policies, we yearn for a script that acknowledges its contribution, addresses its concerns, and a narrative of economic progress that benefits every stratum of society. As budget 2024 unfolds, the hope of countless middle-class families rests on the shoulders of policymakers, trusting that their aspirations will be recognized and met with thoughtful consideration.

Umang M.A. (Frist Year)

बजट का इंतजार अब खत्म होने वाला है। 1 फरवरी को वित मंत्री निर्मला सीतारामण बजट पेश करेगी. बजट से अलग-अलग सेक्टर्स, टैक्सपेयर्स को बड़ी उम्मीदे रहती है। लेकिन, ये उम्मीदें कितनी पूरी होगी ये तो बजट पेश होने पर ही पता चलेगा। इस बार भ्वनेम त्मदज ।ससवूदबम ;भ्ताद्ध को लेकर बजट में बदलाव हो सकता है। वित मत्रांलय के सूत्रो की माने तो अलग-अलग शहरो में नौकरी करने वालों को बड़ी राहत देने की तैयारी है, खासकर बगंलुरु, पुणे जैसे शहरों में रहने वालो के लिए अच्छी खबर आ सकती है। बजट 2024 में वित मंत्री भ्त। के तहत मिलने वाली टैक्स छूट में बदलाव कर सकती फिलहाल नॉन-मेट्रो शहरो में नौकरी करने वालो को मिलने वाली टैक्स छूट का दायरा बढ़ाया जा सकता हैं मेट्रो शहरों के अलावा दूसरे शहरो में रहने वाला निवासियों के लिए भी ऐलान सभंव है। मौजूदा व्यवस्था में हाउस रेंट अलॉउस को लेकर मेट्रो और नॉन-मेट्रो शहरो के लिए नियम बनाए गए हैं 4 मेट्रो शहरों मे बेसिक-क। मिलाकर 50 प्रतिशत भ्त। के तहत टैक्स छूट मिलती है वही, दूसरे शहरों में बेसिक-क। मिलाकर भ्त। में 40 प्रतिशत छूट का प्रावधान है, अब बजट में नॉन मेट्रो शहर में रहने वाले लोगो के लिए भी भ्त। में छूट की सीमा 50 प्रतिशत तक बढ़ाई जा सकती है इसके अलावा नॉन सैलरीड इंडिविजुअल के लिए हर साल भ्त। में मिलने वाली 60 हजार रुपये की छूट को भी बढ़ाया जा सकता है। **नॉन सैलरीड को भी मिल सकता है तोहफाः-** नॉन सैलरीड इंडिविजुअल के लिए भ्त। पर मिलने वाली टैक्स छूट की लिमिट 60 हजार रूपये है। इसे बजट में बढ़ाया जा सकता है। मौजूदा वक्त में सैक्शन 80 ळळ के तहत नॉन सैलरीड इंडिविजुअल को हाउस रेंट अलाउस यानि भ्त। में टैक्स छूट मिलती है हर महीने की लिमिट 5000 रूपये और एक वित वर्ष में अधिकतम 60 हजार रूपये है। इस लिमिट को बढ़ाने पर विचार किया जा सकता है। सरकार नई टैक्स व्यवस्था को प्रोत्साहित करना चाहती है। इस व्यवस्था के तहत इनकम टैक्स में और राहत देने पर अधिक से अधिक टैक्सपेयर्स इस व्यवस्था को अपना सकते है। वह उम्मीद जताई जा रही है कि देश में करीब 50 करोड़ कामगारो को भी इस अंतरिम बजट में खुशखबरी मिल सकती है। 6 साल के बाद सरकार न्यूनतम मजदूरी में इजाफा कर सकती है। अगर ऐसा होता है तो इससे करोड़ो लोगो के जीवन पर सीधा और सकारात्मक पड़ेगा। देश में न्यूनतम मजदूरी यानी मिनिमम वेज में आखिरी बार साल 2017 में बदलाव हुआ था। इसके बाद से न्यूनतम मजदूरी में अब तक एक बार भी इजाफा नही हुआ ह।। मिनिमम वेज के लिए उसमें सुधार करने के लिए 2021 में एक्सपर्ट कमेटी बनाई थी। यह कमेटी 2024 के बजट में मिनिमम वेज में बढ़ोतरी हो सकती है। 2024 के बजट में सरकार की और बॉन्ड मार्केट में बढ़ावा देने के उपाय किए जा सकते है। जिससे बाजार में निवेशको का रूझान बढ़ेगा। सरकार लगातार बॉन्ड मार्केट की गहराई बढ़ाने की कोशिश में जुटी हुई है।

पूंजीगत खर्च बढ़ाने की उम्मीदः- 2024 के बजट में जुड़े जानकारो का मानना है कि अंतरिम बजट का फोकस कैपिटल एक्सपेंडिचर पर जारी रहना चाहिए। सरकार के पूजीगंत खर्च बढ़ाने से प्राइवेट सैक्टर की तरफ से पूंजीगत खर्च में इजाफा देखने को मिल सकता है।

मनरेगा फड़ में हो सकता है इजाफाः- इस साल लोकसभा चुनाव भी होना है। ऐसे में सरकार की ओर से अंतरिम बजट पेश किया जाएगा। वही कहा जा रहा है कि सरकार अंतरिम बजट ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अपना फोकस बढ़ा सकती है। कहा जा रहा है कि सरकार मनरेगा के फंड़ में इजाफा कर सकती है वही किसानो से जुडी आर्थिक योजनाओ में राशि की बढ़ोतरी हो सकती है। सरकार मिड़ल क्लास के लिए इनकम टैक्स में राहत का ऐलान कर सकती है। लेकिन यह राहत सिर्फ नई टैक्स व्यवस्था को अपनाने वाले टैक्सपेयर्स के लिए हो सकती है। मौजूदा समय में नई टैक्स व्यवस्था में सालाना 7 लाख इनकम पर कोई टैक्स नही लगता। इसमें 50 हजार पर की बढ़ोतरी हो सकती है।

...**रेणु** एम.ए. द्वितीय वर्ष

वर्ष 2024 में नया बजट पास होगा। बजट का अर्थ एक वित्तीय वर्ष मैं सरकार की आय तथा व्यय के लेखे जोखे को बजट कहा जाता है। वित्त मंत्रालय के द्वार बजट का निर्माण किया जाता है। बजट एक कुल वित्तीय वर्ष के लिए जारी किया जाता हैण् लेकिन इस बार लोकसभा के चुनाव के कारण बजट पहले पेश किया जाएगा। इस साल वर्ष 2024 में केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के द्वार 1 फरवरी 2024 को नया बजट पेश किया जाएगा। आम बजट 2023 का कुल आकार 45 लाख करोड़ का था इस बजट को कुल 102 मंत्रालयो के बिच विभाजित किया गया। हर साल आने वाले बजट से हर उम्र के लोगों की उम्मीदें होती हैं। साल 2024 में आने वाले बजट से हमें भी बहुत सारी उम्मीदें हैं तथा सबसे ज्यादा टैक्स पेयर्स को इस बजट से उम्मीदें हैं लोगो की अपेक्षाएं अर्थव्यवस्था से कृषि का योगदान बढ़ाया जाएगा। रोज़गार के अवसर बढ़ाये जायेंगे। देश के सभी वर्गों को आम बजट से काफी उम्मीदें हैण् आम लोगों को उम्मीद है कि इस बार उन्हें सरकार की तरफ से थोड़ी राहत दी जाएगीण् यह बजट चुनावों से पहले आने वाला बजट है ऐसे में सरकार के लिए भी यह बजट काफी महत्वपूर्ण होने वाला हैण् हम सभी को उम्मीदें हैं कि आने वाला बजट सभी के लिए उपयुक्त और महत्वपूर्ण होगा सभी लोगों को आने वाले बजट का बड़े ही बेसबरी के साथ इंतजार है।

...**प्रिया एम.ए., प्रथम वर्ष**

महामारी के कारण देश का हर क्षेत्र पीड़ित है, इसमें युवाओ का भविष्य काफी कुछ झेल रहा है आम बजट से समाज के विभिन्न वर्गो को अलग-अलग उम्मीदें है वही युवा वर्ग को भी रोजगार के नए अवसरो की आस है फरवरी को प्रस्तुत होने वाले केन्द्रीय बजट को लेकर आम से खास लोगो की उत्सुकता बढ़ गई है। वित मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा पेश होने वाले आम बजट को लेकर समाज के सभी वर्गो के लोगो में उत्साह देखा जा रहा है करदाताओ को बजट से राहत की उम्मीदें बढ़ गयी है लोग महगांई पर अंकुश के उम्मीद से बेहतर बजट की अपेक्षा की जा रही है बजट को लेकर छात्र-छात्राओं को शिक्षा के क्षेत्र में राहत की उम्मीद है महामारी के कारण देश का हर क्षेत्र पीड़ित है। इसमें युवाओं का भविष्य काफी कुछ झेल रहा हैं आम बजट से समाज के विभिन्न वर्गो को अलग-अलग उम्मीदें है वही युवा वर्ग को भी वित मंत्री के पिटारे से किस वर्ग के लिए क्या खुशियां निकलेगी इसका सभी को इंतजहार है। उल्लेखनीय है कि ब्वअपक.19 महामारी के कारण बहुत से लोगो को रोजगार गंवाना पडा था, इस वजह से बजट में उम्मीद की जा रही है कि सरकार कौशल विकास पर फोकस करेगी ताकि अधिक से अधिक लोगो को प्रशिक्षित कर रोजगार के मौके उपलब्ध कराएं जा सके। कोरोना महामारी के दौरान लॉकडाउन की वजह से बेरोजगारी की दर में तेजी से बढ़त हुई। ऐसे में सभांवना है कि फरवरी में पेश होने वाले बजट में युवाओ के रोजगार को बढ़ावा देने के लिए कुछ खास हो मेड़िकल, ईंजिनियरिंग सहित अन्य विषयो की बेहतर तैयारी के लिए कोंचिग सेटरों में शिक्षा के गुणवता के साथ-साथ ससांधनो में सुधार का ठोस प्रावधान किया जाना चाहिए। प्रावधानो की अनदेखी पर विभागीय कारवाई सुनिश्यित किया जाना चाहिए। गरीब बच्चो के लिए लाभकारी योजनाओ को शामिल किया जाना चाहिए जीवन स्तर और प्रतिव्यक्ति आय में धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। लेकिन बचत के बारे में ऐसा नही कहा जा सकता। घरेलू बचत बढ़ाने से न केवल व्यक्तियों को लाभ होता है, बल्कि सरकार को सस्ते और दीर्धकालिक धन का एक स्त्रोत भी मिलता है बजट में बचत और निवेश को बढ़ावा देने के लिए सेक्शन 80 सी के तहत टैक्स सेविगं स्कीमो पर सलाना 1.5 लाख रुपये की सीमा बढ़ाई जानी चाहिए। इसके अतिरिक्त इस सेक्शन के तहत टैक्स सेविगं फिक्स्ड डिपॉजिट पर पॉच साल की लॉग-इन अवधि को कम करके तीन साल किया जाना चाहिए ताकि इसे और अधिक आकर्षक निवेश विकल्प बनाया जा सके। बजट में शिक्षा के नाम पर कोचिंग सेटरो का बढ़ता धंधा को रोकने का प्रावधान किया जाना चाहिए। विभागीय कसौटी पर खड़ा नही उतरने कोचिंग सेटरो के सचांलन पर रोक का प्रावधान किया जाना चाहिए। आर्थिक रूप से कमजोर बच्चो को कोचिंग सेटरो मे नामाकंन का प्रावधान किया जाना चाहिए। इस बार आम बजट में सरकार की ओर से युवाओ को कुछ न कुछ जरुर मिलने की उम्मीद है। युवाओ की मांग है कि इस बार वित मंत्री शिक्षा को प्रेरित करने वाला बजट पेश करे। इसमें रोजगार की बेहतर व्यवस्था भी करे, ताकि युवाओ का भविष्य बेहतर हो सके, मौजूदा समय मे रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था नही है, युवाओ को स्वयं उधम स्थापित करने के लिए रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था करने की दरकार है। आम बजट में सरकार युवाओ के रोजगारपरक शिक्षा की व्यवस्था करें।

...**ज्योति** एम.ए. द्वितीय वर्ष

Budget has been presented by the government of India every 1st of February in the Parliament by our Finance Minister. It states the government planning about how much it will spend on different sector in the upcoming financial year.

Since 2014 government focus has been on empowerment of Citizens, especially the poor and the marginalized. Measures have been included Programmes that have provided housing, electricity, cooking gas, Access to water and financial inclusion. As the country is developing rapidly we have some prudential and effective expectations from the upcoming budget.

•Economic Empowerment of women- Deendayal Antyodaya Yojana, National Rural Livelihood Mission has achieved remarkable success By mobilizing rural women into 81 lakh Self Help Groups. For the women empowerment we need more SHGs and government participation to encourage them.

• Boosting consumption, implementing reform policies for a fair playing field among manufacturers, strategically allocating funds for infrastructure development, and focusing on agriculture.

• We are the largest producer and second largest exporter of 'Shree Anna' in the world. We grow several types of 'Shree Anna' such as jowar, Ragi, bajra, kuttu, ramdana, kangni, kutki, kodo, cheena, and sama. Government should encourage the small farmers who produce Shree Anna by giving them subsidies on seeds, fertilizers and pesticides. Easy loan and relaxation on the loan repayment.

• Pradhan Mantri Awas Yojana

should be extended further so that the rate of unemployment and poverty will decrease.

• Capital Investment outlay should be increased to 4% of GDP which is 3.4% currently. Increase in capital outlay will increase the capital assests of the country and it will further contribute in production thus the country's GDP will Increase.

• Banking sector growth with financial inclusion of Rural India that is unserved or underserved should include more and more villages.

• Among 190 countries India's Ranking is 63rd as per 2020 data , although it is in the list of top 10 improvers. In the last budget government launched Ease of doing business 2.0. In the upcoming session government should continue the Ease of doing business initiative or either it can launch Ease of doing business 3.0.

• Additionally we are hopeful for the new employment opportunities to reduce the current unemployment which is 8.7% in India by extension of various government schemes and introducing new . Various skill and entrepreneurship programmes should be introduced by government for employment generation.

• We examined that the GST collection of the government have been increased monthly. Government should reduce its GST rate from 5% to 0% on goods like Edible oils, milk food of babies and life saving drugs as they are the basic necessities of the poor section of the society also . Budget plays an important and Influential role in the life's of poor and middle class families. One's savings and expenditure completely depends upon the budget of the government for the next session.

....Somya Gupta
M.A Economics (Final Year)

Take Care of yourSelf

The word hygiene comes from the French hygiène, the latinisation of the Greek techne, meaning "(art) of health", "good for the health, healthy in turn from (hygies), "healthful, sound, salutary, wholesome".In ancient Greek religion, Hygeia was the personification of health, cleanliness, and hygiene. Hygiene is a complex Pandora's box of a topic, full of doubtful stuff. It contains filth and disease, bugs, germs and grubby private habits. It contains ideas about obsessive cleanliness, dirty old men, and coercive states enforcing mental and racial hygiene. On the other hand, it also contains images of sparkling kitchens and bathrooms; scrubbed, perfumed and well-groomed people; and an endless array of cleaning products. Hygiene sits uneasily between filth and cleanliness; between the private and the public; and between the scientific and the moral or religious domains of society. While we all agree that hygiene is important, improving it becomes difficult if we cannot agree on what it means or understand where it comes from. If hygiene is a natural function of the human psyche, originating from before we were human, then we would expect to find that, far from revelling in muck and dirt, prehistoric man would have behaved

hygienically. Hygiene behaviours do not fossilize, so evidence has to be sought elsewhere. Neanderthals apparently used seashell tweezers to pluck hair and early cave paintings show beardless men, suggesting that grooming began early, perhaps to remove facial parasites. Hygiene artifacts, such as combs, are among the earliest material goods recovered. A ceremonial ivory comb in the collection of the Metropolitan Museum of New York dates back to predynastic Badarian Egypt 3200 BCE.

Hygiene is a set of practices performed to preserve health. According to the World Health Organization (WHO), "Hygiene refers to conditions and practices that help to maintain health and prevent the spread of diseases." Personal hygiene refers to maintaining the body's cleanliness. Hygiene activities can be grouped into the following: home and everyday hygiene, personal hygiene, medical hygiene, sleep hygiene, and food hygiene. Home and every day hygiene includes hand washing, respiratory hygiene, food hygiene at home, hygiene in the kitchen, hygiene in the bathroom, laundry hygiene, and medical hygiene at home.

Many people equate hygiene with "cleanliness", but hygiene is a broad term. It includes such personal habit choices as how frequently to take a shower or bath, wash hands, trim fingernails, and wash clothes. It also includes attention to keeping surfaces in the home and workplace clean, including bathroom facilities. Adherence to regular hygiene practices is often regarded as a socially responsible and respectable behavior, while neglecting proper hygiene can be perceived as unclean or unsanitary, and may be considered socially unacceptable or disrespectful, while also posing a risk to public health.

खजूर के लड्डू

सामग्रीः खजूर - 500 ग्राम
काजू - 50 ग्राम
बादाम - 50 ग्राम
किशमिश - 40 ग्राम
खसखस - 40 ग्राम
इलायची पाउडर - 1 छोटी चम्मच
घी - 1/2 कप

विधि – 1. सभी सामग्री को एक साथ ले लेंगे। खजूर को चाकू से छोटे. छोटे टुकड़े में काट लें। काजूए बादामए किशमिश को कश कर लेंगे। कड़ाही को गर्म करे और पूरी धीमी आंच में खसखस को डाई रोस्ट करके निकाल लेंगे। 2 चम्मच निकालकर रख देंगे फिर बाकी दाने को मिक्सी में डालकर दरदरा पीस लेंगे।
2. उसी कड़ाही में घी गरम कर लेंगे और सभी मेवे काजू और किशमिश को सुनहरा होने तक भून कर प्लेट में निकाल लेंगे।
3. अब फिर से पैन में घी गरम करले और कटे खजूर को भी डाल देंगे।
4. कड़ाही में चिपकने लगे तब तक चम्मच से चलाते रहेंगे।इसके बाद भूनें हुए मेवेए खसखसए इलायची पाउडर भी डालकर मिला दें।
5. 4.5 मिनट बाद एक प्लेट में निकाल लेंगे और ठंडा होने देंगे। इसके बाद हल्का गर्म रहे हाथों से दबाते हुए लड्डू बना लेंगे। बचें खसखस में डालकर ऊपर से लड्डू में कोट कर लेंगे।
6. सभी लड्डुओं को इसी तरह से बनाकर तैयार कर लेंगे।
7. खजूर के लड्डू तैयार है।

टमाटर का सूप

सामग्री
टमाटर - 4 बड़े
चुकंदर - 1 1/2 चम्मच
लहसुन की कलियाँ - 3.4 कटी हुई
साबुत काली मिर्च - 7.8 तेज पत्ता - 1
छोटा टुकड़ा मक्खन - 1/2 बड़ा चम्मच
मैदा मक्के का आटा - 1 छोटी चम्मच
चीनी - 1 छोटी चम्मच या स्वादनुसर
पानी - 1 1/2 कप पानी
नमक - स्वादनुसार

विधिः 1द्टमाटर को बड़े टुकडो मैं और चुकंदर को छोटे टुकड़ों में काटे।
2 टमाटरए चुकंदर एलहसुन एकाली मिर्च एतेज पत्ता को एक मध्यम पेन या प्रेशर कुकर में डालें । एक कप पानी और नमक डालें और मध्य आज पर जब तक चुकंदर और टमाटर नरम हो जाए तब तक ढक कर पकाइए । इसमें लगभग 8दृ 10 मिनट का समय लगेगा। अगर आप प्रेशर कुकर का प्रयोग कर रहे हैं तो उन्हें मध्य आज पर 2 सिटी होने तक पकने दे।
3. जब वह नरम हो जाए तब गैस बंद कर दे। ढक्कन निकले और मिश्रण कुछ मिनट के लिए ठंडा होने दे।
4. तेज पत्ता निकाल दे और ब्लेंडर से प्यूरी बना ले ;या मिक्सर ग्राइंडर में प्यूरी बना लेद्ध। प्यूरी बनाते वक्त ध्यान रहे क्योंकि मिश्रण गरम है।
5. एक सॉस पैन में मध्यम आंच पर आधा छोटा चम्मच बटर गर्म करें। उसमें एक बड़ा चम्मच मैदा डालें।
6. एक बड़े कटोरे के ऊपर छानी रखें। उसके ऊपर प्यूरी डालें और उसे छान ले ।बहुत बारीक छन्नी का उपयोग न करें क्योंकि हमें सूप में टमाटर का पल्प भी चाहिए।
7. चमचे से लगातार चलाते हुए 1 मिनट के लिए पकाइए।
8. धीरे.धीरे टमाटर की प्यूरी डालें और चमचे से लगातार चलाते रहे ताकि गांठे ना बने। आधा कप पानी और एक छोटा चम्मच चीनी डालें और मिश्रण को अच्छी तरह से मिला ले।

QUIZ TIME

Q.1 Which state in India has become the first to adopt a water budget for proper management of the resource?
Q.2 Which Indian-origin authority novel 'Western Lane' has been shortlisted for the Booker Prize 2023?
Q.3 ISRO along with which country hosted the international conference on Space craft mission operation SMOPS-2023?
Q.4 Who has been awarded the 2023 International Prize in Statistics?
Q.5 Who has been appointed as the chief of central Industrial Security force (CISF)?
Q.6 Name the traditional folk dance which has recently entered the Guiness Book of World Records for the largest Traditional dance performed at a single venue?
Q.7 Who has become the first woman Air Force Officer to receive the Gallantry Award?
Q.8 The Book titled 'Crosscourt' is the autobiography of which sports person?
Q.9 India's first 'Water Metro' services has been inaugurated in which state.
Q.10 Who has written the book titled 'India's Finance Minister'?
Q.11 Recently who has joined as the new member of BIRCS Bank?
Q.12 Who has won the recently held 'Miss Universe Pakistan 2023' award?
Q.13 After the construction of the New Parliament House by what name will the old Parliament House be known?
Q.14 Which word has been chosen as Collins Dictionary word of the year 2023?
Q.15 Who was the Chief guest of the Pravasi Bharatiya Divas Conference 2023?
Q.16 Which year has been declared as the international year of Millets?
Q.17 What was the theme of G-20 Summit 2023 held under the chairmanship of India?
Q.18 Who has been honoured with wildlife Conservation Award 2023?
Q.19 Which country has announced to remove the symbol of the British monarchy from its bank notes?
Q.20 Which country has hosted the ICC Women's T-20 Cricket World Cup 2023?
Q.21 Who has become the 20th Governor of Arunachal Pradesh?
Q.22 Who has won the title of cricket tournament Ranji Trophy 2023?
Q.23 Who has become the first female science chief of NASA?
Q.24 Where is India's first '3D-printed post office' opened?
Q.25 Who has won the title of 'Femina Miss India 2023'?
Q.26 When is 'National Panchayati Raj Day 2023 celebrated?
Q.27 Who has become the first woman chairman and CEO of Railway Board?
Q.28 According to the world happiness report 2023, which country has topped the list of the world's happiest countries for the sixth consecutive year?
Q.29 Who has been awarded the 'Gandhi Peace Prize' for the year 2021?
Q.30 When was Chandrayaan-3 launched

Answer **1.** Kerala **2.** Chetana Moree **3.** Italy **4.** C.R. Rao **5.** Nina Singh **6.** Bihu **7.** Deepika Mishra **8.** Jaidip Mukerjea **9.** Kerala **10.** A.K. Bhattacharya **11.** Egypt **12.** Erika Robin **13.** Constituent Assembly **14.** Artificial Intelligence (AI) **15.** President of Guyana **16.** 2023 **17.** Vasudaiva Kutumbakam or One Earth one family one future **18.** Alia Mir **19.** Australia **20.** South Africa **21.** Kaivalya Trivikram Parnaik **22.** Saurashtra **23.** Niwla Fox **24.** Bengaluru **25.** Nandini Gupta **26.** 24th April **27.** Jya Verma Sinha **28.** Finland **29.** Geeta Press Gorakhpur (UP) **30.** 14th July 2023

गाजर का हलवा

सामग्रीः गाजर 1 किलो, दूध 1 1/2 लीटर, हरी इलायची 5, घी 5.7 टेबल स्पून, चीनी 5.7 टेबल स्पून, किशमिश 2 टी स्पून, बादाम 1 टेबल स्पून, खजूर 2 टेबल स्पून
विधि 1. गाजर को पहले अच्छी तरह छील कर कस ले । **2.** इसके बाद इलायची डालकर दूध को हल्की आंच पर उबालें। **3.** भारी कढ़ाई में घी को गर्म करें और उसमें कई हुई गाजर और दूध मिले हल्की आंच पर करीब 10 से 15 मिनट हेतु रखकर छोड़ दे। **4.** फिर इसमें चीनी मिलाकर हलवे को तब तक पकाएं जब तक इसका रंग गाडे लाल रंग का ना हो जाए। **5.** अच्छे से पक जाने के बाद इसमें कटे हुए ड्राई फ्रूट्स को मिक्स करें। **6.** गरम गरम सर्व करें।
नोट– हलवे को मुलायम बनाने के लिए चीनी अंत में ही डालें।

A report on the Uttarkashi's Tunnel Rescue

Construction: The Silkyara Bend-Barkot tunnel was being constructed by Navayuga Engineering Construction Limited as part of the Char Dham. It was located on the Yamunotri end of National Highwas 134. That National Highwas is planned to connect Dharasu on the south end to Yamunotri on the North end. Thy tunnel will shorten the route by about 20 kilometres. It is planned to be 4.5 kilometres.

Collapse : The incident happened at approximately 5:30 am on 12 on November 2023 in the northerns states Uttarkashi district.

A section of the Silkyara tunnel under construction collapsed. The collapse occurred around 200 meters from the entrance of the tunnel, trapping 41 construction workers. A team of geologist from state government and educational institutions was sent to the location in order to determine possible cause of incident.

Rescue Efforts :-

Two tunnel Boring machines have been deployed during the rescue efforts. The second (flown in three parts) of the progress of the first was insufficiently speedy. On Monday evening, the rescue operation witnessed a break through after rescue were able to push a six inch diameter pipe through the debris inside the tunnel.

The new pipe which was inserted is wider then 4 inch diameter pipe, hours after a portion of it, caved in on 12 November.

The operation which entered it's 10th day on Tuesday, has encountered several delays and obstacles primarily clue to loose soil and falling debris.

The plan is to dig a hole wide enough to accommodate multiple 900 mm pipes to create a pathway through which the workers can crawl out of tunnel.

On Monday officials said that the were attempting to dig two more tunnels by side of the main tunnel as additional escape routes.

On Tuesday, welding work on fifth pipe had started. So far, it is assuming that the workers will be out from tunnel till 30th November. The efforts were still going for the rescue of workers.

Leaders of Missions Rescue operation were led by the National Disaster Response Force (NDRF), State Disaster Response Force (SDRF) and the Police.

....Samridhi Jain
B.Com IInd (General)

राम मंदिर स्थापना : एक ऐतिहासिक क्षण

राम मंदिर स्थापना एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक घटना है जो भारतीय समाज के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह घटना न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की नई दिशा की शुरुआत का भी प्रतीक है।

राम मंदिर की स्थापना का इतिहास लगभग पांच शताब्दियों तक जाता है, जब भगवान श्री राम ने अयोध्या में अपनी राजा की पदवी स्वीकार की थी। भगवान राम के जन्म स्थल पर एक मंदिर की मांग लंबे समय से चल रही थी और इसे लेकर विवाद भी था।

1992 में हुए बाबरी मस्जिद के विध्वंस के बाद राम मंदिर को नष्ट करके बनाई गई बाबरी मस्जिद की जगह फिर से राम मंदिर बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आंदोलन शुरू हुआ। कई सामाजिक और कुछ राजनीतिक दलों ने इस आंदोलन का समर्थन किया और राष्ट्रीय स्तर पर एक बड़े आंदोलन की शुरुआत हुई।

न जाने कितने ही सबूत, गवाह और दलीलों के बाद अंततः सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के अनुसार वर्ष 2020 में राम मंदिर की भूमि पर भव्य राम मंदिर की स्थापना का कार्य आरंभ हुआ। इससे पहले रामलाल के लिए अलग स्थान पर अस्थाई मंदिर बनाया जा चुका था जिसे राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार के कार्यकाल में राम मंदिर का भव्य निर्माण आरंभ हुआ तथा 22 जनवरी 2024 को रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा हुई।

क्षत्रिय समाज में एक समर्थन और एकजुट की भावना को बढ़ाया है। इस मंदिर की स्थापना के साथ ही भारतीय समाज में एक नया धार्मिक और सांस्कृतिक सिद्धांत प्रतिष्ठित हो रहा है। भगवान श्री राम को मानवता के आदर्श मानकर यह मंदिर एक अद्वितीय धार्मिक स्थल के रूप में स्थापित हो रहा है।

इसके साथ ही राम मंदिर की स्थापना ने राजनीतिक दलों के बीच एक नया समझौता और समर्थन बनाया है। यह सिद्ध हुआ है कि धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों को सार्वजनिक रूप से बड़ी साहित्यिक और सांस्कृतिक दृष्टि से देखा जा रहा है और राजनीतिक परिस्थितियों में एक नई दिशा देने का प्रयास किया जा रहा है। इस घटना ने यह भी दिखाया है कि कैसे धार्मिक और सामाजिक एकता समृद्धि और समरसता की दिशा में बदल सकती है।

राम मंदिर स्थापना की चर्चा न केवल भारत में अपितु विदेशों में भी जोर-शोर से हो रही है। आज पूरे विश्व में भारत का परचम लहरा रहा है। पूरे विश्व ने भारत का लोहा माना है। श्री राम मंदिर की स्थापना के साथ भारतीय समाज में एक नई धार्मिक और सांस्कृतिक ऊर्जा का संचार हो रहा है। समर्पण और आदर्शवाद के माध्यम से लोग एक साथ आ रहे हैं और समृद्धि की और बढ़ रहे हैं।

राम मंदिर की स्थापना के माध्यम से व्यक्ति और समुदायों को एक साथ लेकर चलने का संकेत मिलता है कि भारतीय समाज विभिन्नता को स्वीकार करने की क्षमता रख सकता है और एक मिलनसार समाज की दिशा में प्रकट हो सकता है। इस समय, राम मंदिर की स्थापना ने एक नए भारत की ओर प्रवृत्ति को दिखाया है, जिसमें धार्मिकता, सांस्कृतिक समृद्धि और सामाजिक एकता के सिद्धांतों को मजबूती से जोड़ा जा रहा है।इसमें राजनीतिक विषयों की बात करने के लिए भी जगह है, क्योंकि राम मंदिर के माध्यम से सामाजिक समृद्धि और सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा मिल रहा है।

अतः राम मंदिर की स्थापना ने भारतीय समाज को एक नया दृष्टिकोण दिखाया है और सभी वर्गों और समुदायों को एक साथ लेकर चलने का संकेत किया है। यह घटना हमें यह सिखाती है कि समृद्धि और समरसता की दिशा में हम सभी मिलकर काम कर सकते हैं और एक सशक्त और समृद्धि शील भारत की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं।

जय हिन्द-जय भारत, जय श्री राम

...संगीता शर्मा(कालूवाला)
बीएससी द्वितीय वर्ष

संकष्टी चतुर्थी जिसे कहा जाता है तिल चतुर्थी

आज संकष्टी चतुर्थी है. माघ कृष्ण चतुर्थी को आने वाली संकष्टी चतुर्थी को तिल चतुर्थी या माघी चतुर्थी भी कहा जाता है। इस दिन भगवान गणेश और चंद्रमा की उपासना की जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन गणपति की उपासना करने से जीवन के संकट टल जाते है। संतान प्राप्ति के लिए ये दिन उत्तम माना जाता है। इस दिन गणपति के आशीर्वाद से संतान से जुड़ी तमाम समस्याएँ भी दूर होती है। संकट चौथ पर माताएँ अपनी संतान को कष्टो से बचाने और उनकी उन्नति के लिए सूर्योदय से चंद्रोदय तक निर्जला व्रत रखती है।

यही कारण है कि संकट चतुर्थी व्रत में चंद्रमा की पूजा को बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। रात के समय चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद ही महिलाएँ अपना व्रत खोलती है। आइए आपको संकट चतुर्थी पर गणेश व चंद्र पूजन की विधि और चंद्रोदय का समय बताते है। संकट चतुर्थी पर खास पकवान बनाए जाते है। इस दिन तिल और गुड़ इन दोनों चीजों का बहुत महत्तव माना जाता है। तिलों के बिना संकट चतुर्थी का त्यौहार अधूरा माना जाता है। पूरे वर्ष में कुल 13 संकष्टी चतुर्थी मनाई जाती है और हर महीने अलग-अलग पीठ और भगवान गणेश के विभिन्न रूपों की पूजा की जाती है।

....कुमकुम(बी.ए तृतीय वर्ष)

उत्तर भारत का लोकप्रिय त्यौहार लोहड़ी

लोहड़ी हमारे उत्तर भारत विशेषकर पंजाब राज्य का एक बहुत ही लोकप्रिय त्यौहार है। यह त्यौहार मकर संक्रान्ति के एक दिन पहले मनाया जाता है। इस त्यौहार को सभी लोग मिलकर मनाते है। पंजाब राज्य मे पूरा गांव मिलकर लोहड़ी मनाता है। आजकल यह त्यौहार हर राज्य में मनाया जाने लगा है लोहड़ी के दिन लोग अग्नि जला कर उसके चारों और फेरे लेते है। और रेवड़ी, मूंगफली आदि एक-दूसरे को देते है। और आपस में बाटँते है और खाते है। इस त्यौहार में पंजाब का लोकप्रिय नृत्य भंगडा भी किया जाता है। लोहड़ी का एक अन्य नाम 'लाल लोई' भी है। यह त्यौहार पंजाब, डोगरा, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू आदि राज्यां में भी लोहड़ी का त्यौहार मनाया जाता है। यह 12 या 13 जनवरी को ही होता है। कई लोगो का कहना है कि प्रजापति दक्ष की पुत्री सती के अग्नि में भस्म होने के बाद सती की याद में भी अग्नि जलाई जाती है। लोहडी के त्यौहार में माताएँ अपनी पुत्रियों को उनके ससूराल में उपहार भेजती है। जैसे वस्त्र, मिठाई, रेवडी, मूंगफली, फल आदि। लोहडी से 20-25 दिन पहले ही छेटे-छेटे बालक व बालिकाएँ लोहडी के लोकगीत गाकर लकडी और उपले एकत्रित करते है। वो घर-घर जाकर लोहडी को लोकप्रिय गीत गाते है। जो इस प्रकार है। (सुंदरी मुंदरी दुल्हा भट्टी वाला) ये इस गीत के बोल है। संचित सामग्री को लेकर लोहडी के दिन पर सभी लोग अपने नगर/गाँव के एक खाली स्थान पर लकड़ियाँ और उपलो के माध्यम से अग्नि जलाई जाती है। और सभी लोग पहले पूजा करते है और फिर अग्नि के चारों और फेरे लेते है। घर वापस आते समय लोहड़ी मेंसे दो-चार दहकते कोयले प्रसाद के रूप् में घर लाने की प्रथा है। लोहडी का त्यौहार पंजाबियों का प्रमुख त्यौहार माना जाता है लोहडी की उत्पति के बारे में काफी बाते कहीं जाती है। कई लोगो का मानना है। कि यह त्यौहार जाडे की ऋतु के आने का घोतक के रूप में भी मनाया जाता है

.... निकिता(बी. ए. द्वितीय वर्ष)

भारत की प्राचीन संस्कृति का आधार स्तंभ मकर संक्रांति पर्व

पर्व एवं अनुष्ठान, भारत की प्राचीन, उज्ज्वल संस्कृति के आधार स्तंभ हैं। त्योहार हमारे देश की विविधता में एकता का प्रतीक हैं। हमारे ऋषि मुनियों ने इन पर्वों को विशेष रूप से उर्जा एवं दिव्यता का संचार करने वाला बताया है। ये त्योहार प्रकृति एवं मनुष्य के मधुर संबंधों को दर्शाते हैं। लोहड़ी, मकर संक्रांति, पोंगल, बिहू आदि पर्व फसलों की कटाई के मौसम को चिन्हित करते हैं। लोग अच्छी फसल के उत्पादन का आनन्द लेते हैं और इन त्योहारों को मनाते हैं।लोहड़ी एवं मकर संक्रांति का पर्व भारतीय संस्कृति के राष्ट्रीय, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्य का पर्व है। मकर संक्रांति का संबंध सीधा पृथ्वी के भूगोल और सूर्य की स्थिति से है।

सक्रांति का अभिप्राय है परिवर्तन। हमारे शास्त्रों में सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन मार्गो का विशेष रूप से उल्लेख मिलता है। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का उद्घोष करने वाली भारतीय संस्कृति में मकर संक्रांति के मंगल पर्व पर सूर्य मकर रेखा से गुजरते हुए उत्तरायण में प्रवेश करता है। यह सुषुप्ति से जागृति की ओर बढने का संदेश देता है।हमारे ग्रंथों में उत्तरायण(मकर संक्रांति) को नव स्फूर्ति, प्रकाश और ज्ञान के साथ जोड़ा गया है। उत्तरायण को मोक्ष प्रदान करने वाला कहा गया है। सूर्योपासना का पर्व मकर संक्रांति हिन्दू धर्म के प्रमुख त्योहारों में शामिल है। हर प्रांत में इसका नाम और मनाने का तरीका अलग- अलग है। इसे तमिलनाडु में पोंगल, असम में बिहू व बिहार में खिचड़ी के रूप में मनाया जाता है।

अलग- अलग मान्यताओं के अनुसार इस पर्व के पकवान भी अलग-

अलग होते हैं। लेकिन दाल और चावल की खिचड़ी इस पर्व की प्रमुख पहचान बन चुकी है। विशेष रूप से गुड़ और घी के साथ खिचड़ी खाने का महत्व है। इसके अलावा तिल और गुड़ का भी मकर संक्रांति पर बेहद महत्व है। इस दिन सुबह जल्दी उठकर तिल के उबटन से स्नान किया जाता है। इसके अलावा तिल और गुड़ के लड्डू व अन्य व्यंजन भी बनाएं जाते हैं।

सूर्य के उत्तरायण प्रवेश के साथ स्वागत पर्व के रूप में मकर संक्रान्ति का पर्व मनाया जाता है। इसे स्नान व दान का पर्व भी कहा जाता है। इस दिन तीर्थों व पवित्र नदियों में स्नान का विशेष महत्व है। इस दिन गुड़, तिल, खिचड़ी, फल एवं राशि के अनुसार दान किया जाता है। इस दिन पतंग उड़ाने का भी बहुत महत्व होता है। लोग पतंगबाजी के बड़े बड़े आयोजन करते हैं।

देश भर में मकर संक्रान्ति का पर्व अतयंत हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। मकर संक्रान्ति का यह पर्व लोक आस्था व धार्मिक महत्व को दर्शाता है।

...प्रीति बीए वर्ष तृतीय

त्याग, सेवा, भक्ति और बलिदान की धारा का नाम है 'गुरु गोविंद सिंह'

गुरु गोविंद सिंह जयंती सिख धर्म के लोगों के लिए एक प्रमुख त्योहार है। गुरु गोविंद सिंह जी सिखों के दसवें गुरु थे। इन्होंने सिख धर्म के लिए बहुत महान कार्य किए। इनका जन्म 22 दिसम्बर 1666 को बिहार की राजधानी पटना में हुआ था। वहीं पर आज तख्त श्री हरमिंदर जी पटना साहिब स्थित है। इनके बचपन का नाम गोविंद राय था। इनके पिता सिखों के 9वें गुरु श्री तेगबहादुर जी थे। इनकी माता का नाम गुजरी देवी था। ये बचपन से ही तेजस्वी, शूरवीर और स्वाभिमानी थे। घुड़सवारी करना, हथियार चलाना इनके प्रमुख खेल थे। गोविंद राय जी बचपन में मित्रों की दो टोलियाँ एकत्रित कर युद्ध करना व शत्रु को हराना सिखते थे।उन्होंने बाल्यकाल में ही हिन्दी, संस्कृत व फारसी आदि भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान हासिल कर लिया था। उन्होंने एक महान योद्धा बनने के लिए सैन्य कौशल भी सिखा।

कशमीरी पंडितों को जबरन धर्म परिवर्तित कर मुस्लिम बनाए जाने के विरोध में उनके पिता गुरु तेगबहादुर जी ने आवाज उठाई। उस समय गोविंद राय जी की आयु केवल नौ वर्ष थी। गुरु तेगबहादुर जी के इस्लाम का विरोध करने के अपराध में 11नवम्बर 1675 को मुगल शासक औरंगजेब ने दिल्ली के चांदनी चौक में सरेआम उनका सर कलम करवा दिया। इसके पश्चात वैशाखी के दिन 29 मार्च 1676 को गोविंद राय जी सिखों के दसवें गुरु बने। उन्होंने सिखों के पवित्र ग्रंथ गुरु ग्रंथ साहिब को पूरा किया तथा उन्हें गुरु रूप में सुशोभित किया।

वे मानवमात्र को नैतिकता, निडरता तथा आध्यात्मिक जागृति का संदेश देते थे।उनके जीवन का प्रथम दर्शन था कि धर्म का मार्ग ही सत्य का मार्ग है और सत्य की सदैव विजय होती है। वे भक्ति और शक्ति का अद्भुत संगम थे। उन्होंने ही सिखों को 'सतश्रीअकाल का नारा दिया था। वे स्वयं एक महान लेखक, मौलिक चिंतक व साहित्य की कई भाषाओ के ज्ञाता भी थे। 'विचित्र नाटक' व 'चण्डी दिवार' उनकी आत्मकथा हैं। 'दशमग्रंथ' गुरु गोविंद सिंह जी की रचनाओं का संकलन है। उनके दरबार में 52 कवियों व लेखकों की उपस्थिति रहती थी, इसलिए उन्हे 'संत सिपाही' भी कहा जाता था।

गुरु गोविंद सिंह जी शूरवीर और तेजस्वी नेता थे। उन्होंने जुल्म को खत्म करने व गरीबों की रक्षा के लिए मुगलों के साथ 14 युद्ध लड़े और सभी में विजय प्राप्त की। उनका मानना था कि शक्तिहीन व्यक्ति यदि शांति करता है तो वह कायर माना जाता है। गुरु गोविंद सिंह जी ने कमज़ोरों को वीर और बहादुरों को सिंह बना दिया था।

चिड़ियों से मैं बाज तड़ाऊँ,
गीदड़ों को मैं शेर बनाऊँ
सवा लाख से एक लड़ाऊँ, तभी गोविंद सिंह नाम कहाऊ

गुरु गोविंद सिंह जी विश्व की बलिदानी परम्परा में अद्वितीय थे। उन्होंने धर्म के लिए अपने पूरे परिवार का बलिदान दे दिया। इसीलिए उन्हें 'सरबंसदानी' कहा जाता है। इसके अलावा जनसाधारण में वे कलगीधर, बांजावाले व दशमेश आदि नाम व उपनामों से प्रसिद्ध हैं।

देश की अस्मता, भारतीय विरासत और जीवन मूल्यों की रक्षा के लिए 1699 में उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की। 27 दिसम्बर 1704 को उनके पुत्रों 'जोरावरसिंह एवं फतेहसिंह' को दिवारों में चिनवा दिया गया, गुरु गोविंद सिंह जी ने मुगल शासक औरंगजेब के पास जफरनामा (विजय की चिठ्ठी) भेजकर यह चेतावनी दी कि तुम्हारा साम्रा'य नष्ट करने के लिए खालसा पंथ तैयार है। उन्होंने खालसा को 'काल पुरख की फौज' पद से नवाजा था।

गुरु गोविंद सिंह जी शौर्य, साहस, पराक्रम, वीरता के प्रतीक थे। 7 अकतूबर 1708 को गुरु गोविंद सिंह जी नांदेड़ साहिब में दिव्य 'योति में लीन हो गए। उन्ही की स्मृति में प्रति वर्ष देश भर में गुरु गोविंद सिंह जयंती मनाई जाती है। इस दिन सभी गुरुद्वारों को सजाया जाता है। इस दिन नानक वाणी पढ़ी जाती है और लोक कल्याण के तमाम कार्य किए जाते हैं।इस दिन देश-विदेश में स्थापित गुरुद्वारों में लंगर रखा जाता है।

उन्होंने सदा प्रेम, एकता व भाईचारे का संदेश दिया था। गुरु गोविंद सिंह जी की सेवा, भक्ति, शान्ति, क्षमा व सहनशीलता की भावना युगों- युगों तक मानवता में कायम रहेगी।

गुरु गोविन्द सिंह का जन्म 22 दिसम्बर 1666 को पटना में नौवें सिक्ख गुरु श्री तेग बहादुर जी और माता गुजरी के घर हुआ था। उनके बचपन का नाम गोविन्द राय था। मार्च 1672 में उनका परिवार हिमालय के शिवालिक पहाड़ियों में स्थित चक्क नानकी नामक स्थान पर आ गया। चक्क नानकी ही आजकल आनन्दपुर साहिब कहलाता है। यहीं पर इनकी शिक्षा आरम्भ हुई। उन्होनें फारसी, सस्कृत की शिक्षा ली और सैन्य कौशल सीखा।

11 नवम्बर 1675 को इस्लाम न स्वीकारने के कारण औरगंजेब ने दिल्ली के चादंनी चौक में सार्वजनिक रुप से उनके पिता गुरु तेग बहादुर का सिर कटवा दिया। इसके पश्चात वैशाखी के दिन 29 मार्च 1676 को गोविन्द सिंह सिक्खों के दसवें गुरु घोषित हुए। दसवें गुरु बनने के बाद भी उनकी शिक्षा जारी रही। शिक्षा के अतंर्गत उन्होनें पढ़ना-लिखना, घुड़सवारी तथा सैन्य कौशल सीखे।

सन् 1699 में गुरु में गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की जो सिक्खो के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण दिन माना जाता है। इन्होनें पवित्र ग्रन्थ 'गुरु ग्रन्थ साहिब' को पूरा किया। उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने का सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत उनकी आत्मकथा 'बचित्तर नाटक' है, जो दसम ग्रन्थ का एक भाग है।

उन्होने अन्याय अत्याचार और पापों को खत्म करने के लिए और धर्म की रक्षा के लिए मुगलों के साथ 14 युद्ध लड़े। धर्म की रक्षा के लिए मुगलो के साथ युद्ध किए तथा समस्त परिवार का बलिदान किया, जिसके लिए उन्हें 'सरबंसदानी' भी कहा जाता है। वे भक्ति तथा शक्ति के अद्वितीय संगम थे। इसलिए उन्हें 'संत सिपाही' भी कहा जाता था। वे अपनी वाणी में उपदेश देते हैं

''भै काहू को देत नहि, नहि भय मानत आन''

अर्थात मनुष्य को किसी को ड़राना भी नहीं चाहिए और न किसी से डरना चाहिए।

खालसा पंथ की स्थापनाः- गुरु गोविन्द सिंह जी ने सन् 1699 में बैसाखी के दिन खालसा- जो सिक्ख धर्म के विधिवत दीक्षा प्राप्त अनुयायियों का एक सामूहिक रूप है उसका निमार्ण किया। खालसा पंथ के निर्माण से पहले एक बार सिक्ख समुदाय की एक सभा में गुरु गोविन्द सिंह ने एक सवाल पुछा कि कौन अपने सर का बलिदान देना चाहता है? उसी समय एक स्वयं सेवक इस बात के लिए आगे आया। गुरु गोविन्द सिंह उसे अपने साथ तम्बू में ले गए और कुछ देर बाद एक खून से लिपटी तलवार के साथ वापस आए। गुरु जी ने दोबारा उस भीड़ में वही सवाल पुछा और उसी प्रकार एक और व्यक्ति राजी हुआ। फिर से गुरु जी उसके साथ तम्बू में गए तथा खून से सनी तलवार उनके हाथ में थी। इसी प्रकार पांचवा स्वयंसेवक जब उनके साथ गया तो कुछ देर बाद गुरु जी सभी जीवित सेवकों के साथ वापस लौटे और उन्होनें उन्हें पंज प्यारे या पहले खालसा का नाम दिया। पहले पांच खालसा का निर्माण करने के बाद उन्हें छठवां खालसा का नाम दिया गया। इस प्रकार उनका नाम गोविन्द राय से गोविन्द सिंह पड़ गया।

गुरु गोविन्द सिंह जी द्वारा एक लोहे के कटोरे में पानी और शक्कर (चीनी) को दो धारी तलवार से घोलकर उसे अमृत का नाम दिया गया। इनके द्वारा ही खालसा पंथ के लिए पांच ककारों के महत्व को समझाया गया- केश, कंघा, कडा, किरपान, कच्चेरा को सिख के लिए आवश्यक बताया।

निधनः 'मुक्तसर' नामक स्थान पर 8 मई सन् 1705 में मुगलों के साथ भयानक युद्ध हुआ, जिसमें गुरु जी की जीत हुई। आगे 1706 में गुरु जी को औरंगजेब की मृत्यु की खबर मिली। इसके बाद इन्होनें बहादुरशाह को बादशाह बनाने में पुरी मदद की। बहादुरशाह व गुरु जी के संबधों को देखकर नवाब वजीत खाँ डर गया। नवाब ने दो पठानों की मदद से गुरु जी पर हमला करवाया, जिसके बाद 7 अक्टूबर 1708 को गुरु गोविन्द सिंह जी नांदेड़ में दिव्य ज्योति में लीन हो गए।

....**मनीषा**(बी.ए. द्वितीय वर्ष)

किसानों के मसीहा दीनबंधु चौधरी छोटूराम

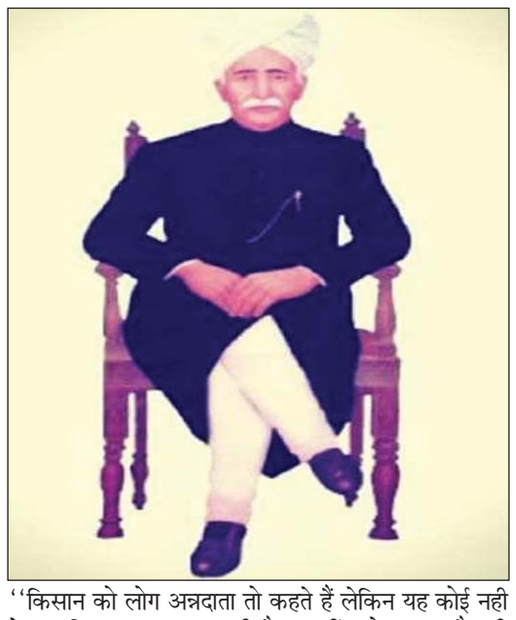

''किसान को लोग अन्नदाता तो कहते हैं लेकिन यह कोई नही देखता कि वह अन्न खाता भी है या नहीं। जो कमाता है वही भूखा रहे यह दूनिया का सबसे बडा आश्चर्य है।''

किसानों के मसीहा, छोटूराम के इन चंद शब्दों ने इतिहास के पन्नो में किसानों की

जगह बनाई। मुसलमानों के रहबर-ए-आजम और हिन्दूओं के दीनबंधु सर छोटूराम का जन्म 24 नवम्बर 1881 में झज्जर के छोटे से गांव गढ़ी सांपला में साधारण किसान परिवार में हुआ। उनका वास्तविक नाम रिछपाल था। अपने भाइयों में ये सबसे छोटे थे इसलिए सारे परिवार के लोग इन्हे छोटू राम कहकर पुकारते थे।

स्कूल रजिस्टर में भी इनका नाम छोटू राम ही लिखा गया तथा बाद में ये महापुरुष छोटूराम के नाम से विख्यात हुए। इनकी प्रारंभिक शिक्षा तो गांव के पास के स्कूल से हो गई परन्तु वे आगे भी पढ़ना चाहते थे। इसलिए उनके पिता उनकी आगे की पढ़ाई के लिए साहूकार से कर्ज मागंने गए परंतु वहाँ साहूकार ने उनका बहुत अपमान किया। अपने पिता के इस अपमान ने छोटूराम के कोमल मन में विद्रोह के बीज बो दिए।

उन्होनें एक ईसाई मिशनरी स्कूल में दाखिला ले लिया, जहाँ से उनके जीवन की पहली क्रांति की शुरुआत हुई। उन्हे स्कूल में 'जनरल रॉबर्ट' के नाम से जाना जाने लगा। अब छोटूराम हर अन्याय के विरोध में खड़े होने लगे।

सन् 1905 में दिल्ली के सैंट स्टीफंस कॉलेज से उन्होने ग्रेजएशन की। आर्थिक हालातो के चलते उन्हे मास्टर्स की डिग्री छोड़नी पड़ी। उन्होनें राजा रामपाल सिंह के सह-निजी सचिव के रूप में काम किया और वर्ष 1907 तक अंग्रेजी के हिन्दुस्तान समाचार-पत्र का संपादन किया। इसके बाद वे वकालत की डिग्री प्राप्त करने चले गए।

साल 1911 में उन्होनें वकालत की डिग्री प्राप्त कर ली। 1912 से ये चौधरी लालचंद के साथ वकालत करने लगे। उसी साल उन्होनें जाट सभा का भी गठन किया। साथ ही अनेक शिक्षण सस्थानों की स्थापना की।

सर छोटूराम देश में किसानों की दुर्दशा से भली-भाँति परिचित थे। इसलिए उन्होनें साल 1915 में 'जाट-गजट' नामक अखबार शुरु किया। इसके माध्यम से उन्होनें ग्रामीण जनजीवन का उत्थान और साहूकारों द्वारा गरीब किसानों के शोषण पर क्रांतिकारी लेख लिखे। वे अंग्रेजी अफसरों के अत्याचारों के खिलाफ न तो बोलने से डरते थे और न ही लिखने से। पूरे देश में उनकी शाख्सियत के चर्चे होने लगे। साल 1937 में पंजाब के प्रोवेशियल असेंबली चुनावों में उनकी पार्टी को जीत मिली और वे विकास व राजस्व मंत्री बन गए। इसके बाद लोग उन्हे 'राव बहादुर कहने लगे। किसान आंदोलन- देश के किसानों को एक करने के लिए उन्होनें युनियनिस्ट पार्टी का गठन किया, जिसे जमींदार लीग के नाम से जाना गया। उनकी कलम जब भी चलती तो भारतीयों के साथ-साथ ब्रिटिश राज को भी झकझोर कर रख देती। लोगों के बीच उनके बढ़ते कद को देखकर, अंग्रेजी सरकार द्वारा सर छोटूराम को देश निकाला देने के प्रस्ताव के पक्ष में नही आई। तत्कालीन पंजाब सरकार ने बताया कि चौधरी छोटूराम अपने आप में एक क्रांति है, अगर उन्हें देश निकाला मिला तो फिर से देश में क्रांति होगी तथा इस बार हर एक किसान चौधरी छोटूराम बन जाएगा। सर छोटूराम ने ऐसे कई समाज सुधारक कानून पारित करवाए जिससे किसानों को शोषण से मुक्ति मिली। ये है पंजाब रिलीफ इंडेब्टनेस (1934), द पंजाब डेब्टर्स प्रोटेक्शन एक्ट (1936), साहूकार पंजीकरण एक्ट (1938), गिरवी जमीनों की मुफ्त वापसी एक्ट (1938), व्यवसाय श्रमिक अधिनियम (1940) आदि। भाखडा-नांगल बांध भी चौधरी छोटराम की ही देन है। अंतिम यात्रा- साल 1945 में 9 जनवरी को चौधरी छोटूराम ने अपनी आखिरी सांस ली। वे स्वयं तो चले गए परंतु उनके लेख आज भी देश की अमूल्य विरासत हैं। किसानों के इस नेता ने जो लिखा वह आज भी देश और समाज व्यवस्था पर लागू होता है।

...**दिव्या(बी.ए द्वितीय वर्ष)**

शौर्य, बलिदान व त्याग की मिसाल महाराणा प्रताप

आजकल भारत में जब भी इतिहास पर चर्चा होती है तो निगाहें हमेशा मुगलों के कालखण्ड पर आकर ही क्यों टिक जाती है? यह बात ठीक है कि मुगलों ने उतर भारत पर दो शताब्दियों तक शासन किया लेकिन उनके अलावा भी भारत का एक इतिहास है जिस पर वास्तव में ध्यान देने की जरुरत है। दरअसल यह इतिहास उन शूरवीरों का हैं जिन्होनें अपने शौर्य, बलिदान एवम् त्याग से ही नही बल्कि कई महानतम मिसालें कायम की। इन्ही में से एक थे- महाराणा प्रताप। महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के मेवाड़ में हुआ था। राजपूत घराने में जन्म लेने वाले प्रताप उदय सिंह द्वितीय और महारानी जयवंता बाई के सबसे बड़े पुत्र थे। वे एक महान पराक्रमी और युद्ध रणनीति कौशल में दक्ष थे। महाराणा प्रताप ने मुगलों के बार-बार हुए हमलों से मेवाड़ की रक्षा की। उन्होनें अपनी आन, बान और शान के लिए कभी समझौता नही किया।

महाराणा प्रताप के बारे में कहा जाता है कि बचपन में ही इनका सामना अकबर से हुआ था और वहीं से ही अकबर और महाराणा प्रताप के बीच में एक दुश्मनी की लकीर खींच गई थी। जो अंतिम समय तक रही। इनकी दूसरी माँ मीराबाई अपने पुत्र जगमाल को मेवाड़ का उतराधिकारी बनाना चाहती थी। लेकिन इनके पिता उदय सिंह महाराणा प्रताप को मेवाड़ का उतराधिकारी घोषित करना चाहते थे। इस बात को लेकर उनके परिवार में काफी दिनों तक संघर्ष चला और अंतिम रुप से मेवाड़ के उतराधिकारी प्रताप चुने गए।

हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध- महाराणा प्रताप के पिता उदय सिंह ने अकबर की विशाल सेना को देखकर चितौड़ छोड़ दिया और उदयपुर को अपना नया राजस्थान बना, जब 1572 ई0. में इनकी मृत्यु हो गई तब उदयपुर के राजा महाराणा प्रताप बने। इसके बाद उन्होनें प्रतिज्ञा ली कि जब तक वह चितौड़ को अकबर से मुक्त नहीं करवाएंगे तब वह जमीन पर सोएंगे और पतल में खाना खाएगें और मूछों में ताव भी नही लगाएंगे।

अकबर एक बहुत ही कुशल राजा था। उसने कई राजपूत वंश के राजाओं को विभिन्न प्रकार का प्रलोभन देकर उन्हें अपने अधीन कर लिया। जब अकबर ने यह प्रस्ताव महाराणा प्रताप के पास भेजा तो उनके इस प्रस्ताव को महाराणा प्रताप ने खारिज कर दिया। उन्होनें कहा कि जब तक उनके शरीर में जान है तब तक वह उदयपुर को अकबर का गुलाम नहीं बनने देंगे। इसके बाद अकबर ने अपने सेनापति मानसिंह को विशाल सेना के साथ महाराणा प्रताप से युद्ध करने के लिए भेजा।

उसके बाद ही हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध घटित हुआ, जिसमें एक तरफ मुगलों के 80000 सैनिक और दूसरी तरफ महाराणा प्रताप के मात्र 22000 सैनिक थे। युद्ध में महाराणा प्रताप ने मुगलों के दाँत खट्टे किए और अंत तक लड़त रहे। इस युद्ध में उनके घोड़े चेतक ने एक अहम भूमिका निभाई थी। इस युद्ध के दौरान महाराणा प्रताप जंगलो में रहा करते थे और वहीं पर कंद-मूल खाकर अपना जीवनयापन करते रहे। हालांकि हल्दीघाटी के युद्ध में उन्हें हार का सामना करना पड़ा, परन्तु उन्होनें कभी भी अकबर के सामने आत्म-समर्पण नहीं किया।

चेतक- महाराणा प्रताप का घोड़ा चेतक उनकी ही तरह बहादुर था। महाराणा के साथ उनके घोड़े को हमेशा याद किया जाता है। जब मुगल सेना महाराणा प्रताप के पीछे लगी, तब चेतक महाराणा को अपनी पीठ पर लिए 26 फीट के उस नाले को लाँघ गया था जिसे मुगल पार न कर सके। चेतक इतना अधिक ताकतवर था कि उसके मुहँ के आगे हाथी की सूड़ँ लगाई जाती थी। चेतक ने महाराणा को बचाने के लिए अपने प्राण त्याग दिए। महाराणा प्रताप की गिनती भारत के इतिहास में एक वीर योद्धा के तौर पर होती है। ऐसा माना जाता है कि जब एक दुर्धटना में गभीर चोट आने के कारण 19 जनवरी 1557 ई0. का उनकी मृत्यु हो गई तथा इसकी सूचना अकबर को मिली तब अकबर की आखें भी नम हो गई और अकबर ने कहा कि उन्होनें अपने पूरे जीवनकाल में ऐसा निड़र और साहसी राजा नहीं देखा।

.....**रचना**(बी.ए. द्वितीय वर्ष)

युवा महोत्सव 'उत्कर्ष' में छात्राओं ने मनवाया अपनी प्रतिभा का लोहा

युवा महोत्सव में विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय का 9 प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान, 3 प्रतियोगिताओं में द्वितीय स्थान व 10 प्रतियोगिताओं में तृतीय स्थान रहा

महाविद्यालय ने 34 प्रतियोगिताओ में छात्राओं ने युवा महोत्सव में अपनी प्रतिभा दिखाई। विभिन्न प्रतियोगिताओं में महाविद्यालय का 9 प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान, 3 प्रतियोगिताओं में द्वितीय स्थान व 10 प्रतियोगिताओं में तृतीय स्थान रहा। प्रतियोगिताओ में छात्राओं ने अद्वितीय प्रतिभा को दिखाते हुए महाविद्यालय का नाम रोशन किया। इस अवसर पर प्रबंधकारिणी समिति व प्राचार्या डॉ0 अलका मित्तल ने छात्राओं और प्राध्यापिकाओं को बधाई देकर उनका उत्साहवर्धन किया। डॉ0 अलका मित्तल ने बताया कि छात्राएं पिछले 1 माह से परीक्षाओं के साथ-साथ युवा महोत्सव की तैयारियां कर रही है। जिसमें प्राध्यापिकाओं की भागीदारी भी सराहनीय रही है। उन्होंने यह भी कहा कि महाविद्यालय की छात्राएं न केवल सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रही है अपितु शैक्षणिक व खेलकूद क्षेत्र में भी नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। छात्राओं की उन्नति में महाविद्यालय पूर्ण रूप से उनके साथ हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करवा रहा है।

युवा महोत्सव में छात्रों की उपलब्धियां इस प्रकार रही

- >> भारतीय शास्त्रीय संगीत तृतीय स्थान
- >> सामान्य समूह गान तृतीय स्थान
- >> कवाली तृतीय स्थान
- >> वेस्टर्न समूह गान तृतीय स्थान
- >> एकल वेस्टर्न गान तृतीय स्थान
- >> शास्त्रीय सितार प्रथम स्थान
- >> शास्त्रीय तबला वादन तृतीय स्थान
- >> पोस्टर मेकिंग प्रथम स्थान
- >> ऑन द स्पॉट पेंटिंग प्रथम स्थान
- >> कार्टूनिंग में प्रथम स्थान
- >> फोटोग्राफी में प्रथम स्थान
- >> कोलाज मेकिंग में प्रथम स्थान
- >> इंस्टॉलेशन में प्रथम स्थान
- >> वाद विवाद अंग्रेज़ी में प्रथम स्थान
- >> मिमीक्री में तृतीय स्थान
- >> माईम में तृतीय स्थान
- >> हिन्दी कविता गायन में द्वितीय स्थान
- >> उर्दू कविता गायन में तृतीय स्थान
- >> पंजाबी कविता गायन में तृतीय स्थान
- >> शास्त्रीय एंकल नृत्य में प्रथम स्थान
- >> रंगोली प्रथम स्थान

आदर्श महिला महाविद्यालय में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर विश्वविद्यालय और महिला हैंडबाल चैंपियनशिप में खिलाड़ियों में चले कड़े मुकाबले

खेल सिर्फ हार जीत का नही अपितु निरंतर सीखने की कला है। खेलो के माध्यम से टीम भावना, अनुशासन व शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। यह उद्गार आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित उतर क्षेत्रीय अन्त विश्वविद्यालय महिला हैड़बॉल चैपियनशिप में पहले दिन बतौर मुख्य अतिथि कुलसचिव चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय ऋतु सिंह ने कहे। उन्होनें यह भी कहा कि आप सभी खिलाड़ी अच्छे अनुभवों के साथ जाऐं और नई पीढ़ी को प्रेरणा दें।

कार्यक्रम में बतौर विशिष्ट अतिथि निर्देशक खेल दीनबंधु छोटूराम विश्वविद्यालय, मुरथल से डॉ0 बिरेन्द्र हुड्डा व साउथ ऐंशियन गेम्स हैड़बॉल मेडलिस्ट संचिता रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ0 पवन बुवानीवाला ने की। ड़ा. पवन बुवानीवाला ने खिलाड़ियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि युवा अवस्था में शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में कुछ न कुछ सीखते रहना चाहिए। उन्होनें भारतीय युवाओ से यह अपील भी कि की वह अपनी प्रतिभा का प्रयोग देश हित के लिए करें। उन्होनें यह भी कहा कि खेलों को धैर्य, अनुशासन, सद्भावना व खेल की भावना से खेलें।

गौरतलब है चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय द्वारा आदर्श महिला महाविद्यालय में आयोजित उतर क्षेत्रीय अन्त महाविद्यालय महिला हैंड़बॉल चैंपियनशिप में 9 राज्यों से 27 टीमों ने भाग लिया। जिसमें मुख्यतः हिमाचल प्रदेश, दिल्ली, उतर प्रदेश, उतराखण्ड़, पजांब, हरियाणा राज्यों से टीम ने शिरकत की। पहला नॉक आउट मैंच उतराखण्ड और पंजाब विश्वविद्यालय टीम के बीच खेला गया जिसमें पंजाब विश्वविद्यालय विजय रहा। 20 जनवरी सुबह तक क्वालीफाई मैच खेले जाएगें। तदोपरांत विजयी टीम के बीच सुपर लीग मैंच 21 जनवरी शाम तक खेलें जाएगें चैपियनशिप उद्घाटन सत्र की विधिवत शुरुआत खिलाड़ीयों द्वारा अतिथि गण को मार्च पास्ट में सलामी देकर की गई। छात्राओं ने योगा की झलकियां व हरियाणवी नृत्य प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन सांयकालीन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि कुलपति प्रो0 राजकुमार मित्तल ने तथा प्रातकालीन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि परीक्षा नियंत्रक ड़ॉ पवन गुप्ता व विशिष्ट अतिथि उमेश कुमार क्रीडा भारती के द्विप्रांतीय संयोजक ने शिरकत की। कुलपति प्रो राजकुमार मित्तल ने संबोधित करते हुए कहा कि खेलों से आपसी प्रेम एवं भाई चारा को बढ़ावा मिलता है। खेलों से शारीरिक एवं बौद्धिक विकास होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में खेल प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है जरूरत है तो सही प्रशिक्षण एवं उचित प्लेटफार्म उपलब्ध करवाने की। विश्वविद्यालय के गठन से लेकर अब तक विश्वविद्यालय के खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का परचम अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लहराया है और विश्वविद्यालय के साथ-साथ भिवानी जिले और हरियाणा का नाम रोशन किया है। विश्वविद्यालय की टीम ने अपने सभी लीग मैच जीतकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। विश्वविद्यालय की टीम एवं प्रशिक्षक तथा खेल विभाग को कुलपति प्रोफेसर राजकुमार मित्तल ने बधाई दी। डॉ. पवन गुप्ता ने कहा कि खेल शारीरिक व्यायाम का अच्छा साधन है आज की युवा पीढ़ी न केवल शैक्षिणिक क्षेत्र मे उन्नति कर रही है अपितु राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर पर खेल जगत में भारत का नाम विश्वपटल पर अकिंत कर रही है। डीन स्टूडेंट वेलफेयर डॉ सुरेश मलिक ने सभी मुख्य अतिथियों का अभिनंदन एवं स्वागत किया।

सांयकालीन सत्र मे बतौर मुख्य अतिथि आदर्श महिला महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. अलका मित्तल ने शिरकत की उन्होनें खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाते हुए कहा कि खेल शारीरिक एवं मानसिक संतुलन की विधा है खेलो के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है जिसमें महिलाओं का योगदान सराहनीय रहा है।

उत्तर क्षेत्रीय अंतर विश्वविद्यालय महिला चैंपियनशिप के चैथे दिन समापन समारोह के प्रातः कालीन सत्र मे बतौर मुख्य अतिथि प्रसिद्ध समाजसेवी मीनू अग्रवाल व विशिष्ट अतिथि अंजू गर्ग ने शिरकत की। उन्होंने छात्राओ को संबोधित करते हुए कहा कि खेल खेलने से लड़कियों में आत्मविश्वास और आत्म सम्मान बढ़ता है। खेल जगत में महिलाओं के कदम रखने से नई कीर्तिमान भी स्थापित हुए हैं ।आज महिलाएं खेलों के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बना रही है। जिसके लिए आवश्यकता है उनके परिवार को भी उनका साथ देने की।

सायंकालीन सत्र में बतौर मुख्य अतिथि संदीप कोटिया हरियाणा राज्य हैंडबॉल महासचिव व विशिष्ट अतिथि परमिंदर सिंह अंतर्राष्ट्रीय हैंडबॉल खिलाड़ी, एमडीयू की खेल उप निदेशक डॉ शकुंतला बेनीवाल ने शिरकत कर छात्राओं का मनोबल बढ़ाया। परविंदर सिंह ने कहा कि युवा अवस्था अपने अंदर गुणों का निखार करने की अवस्था है। इस अवस्था में हमें अत्यधिक सीखना चाहिए। संघर्ष करने के पश्चात जो सफलता मिलती है, उसका अलग ही मजा होता है।

उन्होंने यह भी कहा कि आप अपने अंदर आत्मविश्वास को बढ़ाएं, अपने सीनियर से सीखे। जिसमें सीबीएलयू भिवानी ने सीआरएसयू जींद तीन गोल से हराकर प्रथम स्थान हासिल किया। सीआरएसयू को द्वितीय स्थान मिला। डीयू ने जीएनडीयू , अमृतसर को हराकर तृतीय स्थान हासिल किया। चैंपियनशिप संयोजक डॉ सुरेश मलिक ने कुलपति प्रो राजकुमार मित्तल एवं कुलसचिव डॉ ऋतु सिंह सहित सभी अतिथि गण व अन्य महानुभव का चैंपियनशिप के सफल आयोजन पर धन्यवाद किया और बधाई दी। कार्यक्रम में डॉ0 सुरेन्द्र दलाल, डॉ0 वीरेंद्र, डॉ0 गीता ,मंजीत, डॉ0 सुनील शर्मा, डॉ0 अनुराग, कोच मंजीत ढांढा, सुपरवाइजर रविंद्र शर्मा कुलदीप गुलिया, महाविद्यालय से डॉ0 रिंकू अग्रवाल, डॉ0 निशा शर्मा, डॉ0 रेनू, नेहा, डॉ0 गायत्री बंसल, मोहिनी, एवं समस्त शारीरिक शिक्षा विभाग उपस्थित रहा।

अनुपमा यात्रा

स्वामित्व, मुद्रक एंव प्रकाशक आदर्श महिला महाविद्यालय भिवानी द्वारा हरियाणा की आवाज प्रिंटर्स, भिवानी से मुद्रित करवाकर आदर्श महिला महाविद्यालय, हांसी गेट भिवानी-127021 से प्रकाशित किया जाता है। Title-Code:- HARBIL01906 **प्रबंध सम्पादक:** डॉ. अलका मित्तल

मोबाईल नम्बर: 9306940790 **नोट:** सभी विवादों का न्यायक्षेत्र भिवानी न्यायालय होगा **Gmail:** anupama.express@ammb.ac.in